तीन तलाक का विरोध करने पर

जावेद अख्तर के खिलाफ मुसलमानों को भड़काने की साजिश

■ संवाददाता

मुंबई : एक ही बार में तीन तलाक देने का विरोध करने वाली मुस्लिम संगठन 'मुस्लिमस् फॉर सेक्युलर डेमोक्रेसी' के अध्यक्ष और मशहूर शायर जावेद अख्तर को इस्लाम का दुश्मन कह कर उनका सामाजिक बायकॉट करने का अहवान करके उनके खिलाफ मुसलमानों में धार्मिक घृणा पैदा करने की खतरनाक साजिश की जा रही हैं. जावेद अख्तर के खिलाफ मुसलमानों में धार्मिक उन्माद पैदा करने में मुंबई से प्रकाशित होने वाले दैनिक 'उर्दू टाइम्स' की अहम भूमिका है.

मुस्लिम महिला को एक ही बार में तीन तलाक देकर उस पर अन्याय करने वाले कानून का विरोध 'मुस्लिमस् फॉर सेक्यूलर डेमोक्रेसी' (एम.एस.डी.) करता रहा है. पिछले दिनों कानपुर में मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड की कार्यकारणी की बैठक से पूर्व एम.एस.डी. के अध्यक्ष जावेद अख्तर ने दो जुलाई को एक प्रेस कांफ्रेंस करके पर्सनल लॉ बोर्ड से मांग की थी की वह किसी दबाव में आये बिना तीन तलाक के कानून को खत्म करके तलाक का वह कानून लागू करे जो कुरआन में दिया गया है, यानी किसी महिला को एक खास अवधि में तीन बार तलाक देने पर ही तलाक हो. इस प्रेस कांफ्रेंस के बाद उर्दू टाइम्स ने एम.एस.डी. और जावेद अख्तर का चरित्र हनन करने वाले लेखों और पत्रों की भरमार कर दी. इन लेखों में एम.एस.डी. के तमाम

(शेष पृष्ठ १२ पर)

जावेद *(पृष्ठ १से)*

पदाधिकारियों को खास तौर पर जावेद अख्तर को इस्लाम का दुश्मन, मुनाफिक़ (इस्लाम के अनुसार जो अधर्मी और इस्लाम का शत्रु हो), अमरीका का एजंट और शरीयत (इस्लामी कानून) का अपमान करने वाला बताया गया. वहीं पर एम.एस.डी. को ऐसा अमरीका परस्त संगठन बताया गया, जो मुसलमानों की हमदर्दी की आड़ में यहूदियों का समर्थक और गैर मजहबी लोकतंत्र की मांग करता है.

'उर्दू टाइम्स' के पांच जुलाई के अंक में मुस्लिम मुल्लाओं की ओर से जावेद अख्तर को सामाजिक बायकॉट और खतरनाक परिणामों की धमकी देते हुए कहा गया है कि अगर उन्होंने तीन तलाक के खिलाफ बयान देना जारी रखा तो उनसे इस तरह हिसाब लिया जाएगा कि उन्हें सर छुपाने की जगह नहीं मिलेगी. और उनका अंत भी इस्लाम दुश्मन सलमान रुश्दी जैसा होगा. याद रहे सलमान रुश्दी के खिलाफ ८० के दशक में इरान के इमाम खुमैनी ने कत्ल का फतवा जारी किया था. इस फतवे के पक्ष में मुंबई के कुछ मुसलमानों ने एक जुलूस निकाला था. जुलूस के हिंसक हो जाने पर पुलिस फायरिंग में १२ मुसलमान मारे गये थे. इसी खबर में मुल्लाओं के हवाले से जावेद अख्तर को अपनी सीमाओं में रहने की धमकी देते हुए अखबार ने लिखा है कि तमाम मुसलमान जावेद अख्तर का बायकॉट करें.

इसी तरह ११ जुलाई के 'उर्दू टाइम्स' में दैनिक के कार्यकारी संपादक आलिम नकवी ने लिखा है कि एम.एस.डी. के तमाम पदाधिकारी कम्युनिस्ट और नास्तिक हैं वो मुसलमानों में ऐसे घुस आये हैं कि मुसलमानों को अपना हमदर्द नजर आते है. लेकिन ये लोग मुसलमानों को अमरीका परस्त बनाना चाहते हैं. इसी लिए एम.एस.डी. को संघ परिवार भी पसंद करता है. ११ सितंबर (अमरीका पर आतंकवादी हमला) के बाद पूरे विश्व में मुसलमानों के कुछ ऐसे संगठन बन गये हैं जो दर असल मुसलमानों के दुश्मन है एम.एस.डी. भी मुनाफिक मुसलमानों का ही संगठन है.

११ जुलाई को 'उर्दू टाइम्स' ने अपने रविवार संस्करण में जावेद अख्तर के खिलाफ चार लेख प्रकाशित किये हैं इनमें से एक लेख जावेद अख्तर के परिवारिक जीवन को लेकर है जिसमें शबाना आजमी और उनके बारेमें भद्दी और अश्लील बातें लिखी गयी हैं.

पिछले वर्ष गांधी जयंती के दिन 'मुस्लिमस् फॉर सेक्यूलर डेमोक्रेसी' की स्थापना की गयी थी. इस संगठन का मकसद हर प्रकार की धर्मांधता और धर्म की राजनीति का विरोध करना हैं. मुंबई, पुणे, कोल्हापुर, जलगांव, दिल्ली, भोपाल, हैदराबाद, इलाहाबाद और कोलकाता के पचास मुसलमान इस संगठन के संस्थापक सदस्य हैं जबकि जावेद अख्तर अध्यक्ष, गुलाम पेश इमाम संयोजक, जावेद आनंद महासचिव और हसन कमाल एवं साजिद रशीद उपाध्यक्ष हैं. जावेद अख्तर, गुलाम पेश इमाम और जावेद आनंद 'सिटीजन फॉर जस्टिस एण्ड पीस' (सी.जे.पी.) के भी संस्थापक हैं जो टीस्टा सेटलवाड के साथ 'बेस्ट बेकरी कांड' की पीडित जाहिरा शेख का मुकदमा सुप्रिम कोर्ट में लड़ रहा है.

'उर्दू टाइम्स' की जावेद अख्तर और एम.एस.डी. के खिलाफ मुसलमानों को उत्तेजित करने का सबूत इस बात से भी मिलता है कि जब से यह संगठन बना है जावेद अख्तर और संगठन के खिलाफ अपत्तिजनक ही नहीं अश्लील लेख और चिट्ठियां प्रकाशित किए जा रहे हैं. लेकिन एम.एस.डी. और जावेद अख्तर के पक्ष में भेजा जाने वाला एक भी लेख या पत्र आज तक नहीं छापा गया है. दरगाह ट्रस्ट के महमूद शेख और 'नीड्स' के आसिफ खान का बयान है कि उन्होंने एम.एस.डी. और जावेद अख्तर के खिलाफ छपने वाले लेखों के जवाब में 'उर्दू टाइम्स' को चिट्ठियां भेजी थी लेकिन वह प्रकाशित नहीं की गयी. महमूद शेख के अनुसार उन्होंने जब दैनिक के संपादक से फोन पर कारण पूंछा तो उन्होंने साफ कह दिया कि हमें एम.एस.डी. के पक्ष में किसी भी तरह की तहरीर छापने से मना किया गया है. एमएसडी और जावेद. अख्तर के खिलाफ 'उर्दू टाइम्स' जिस तरह के विस्फोटक लेख छापकर लोगों को उत्तेजित कर रहा है उसे मानवाधिकार आयोग और महिला संगठनों ने बड़ी गंभीरता से लिया है.